10. रघोः उदारता (चित्-चिनयोः प्रयोगः)

हिंदी अर्थ–

नीलेश – दादा जी, यह क्या है?

दादा – यह महाकवि कालिदास का प्रसिद्ध महाकाव्य रघुवंश है।

नीलेश – इस महाकाव्य में किस विषय का वर्णन है?

दादा – इस ग्रन्थ में राजा रघु और उनके वंश का वर्णन है।

नीलेश – राजा रघु कौन थे?

दादा – राजा रघु एक विनयशील उदार चरित्र वाले मनुष्य थे। क्या तुम रघु की उदारता के विषय में सुनना चाहते हो?

नीलेश – हाँ, कृपया उनके विषय में सुनाइए–

दादा – सुनो.....

किसी गुरुकुल में अनेक छात्र विद्या अध्ययन करते थे। उस गुरुकुल के आचार्य वरतन्तु ऋषि थे। उनके गुरुकुल में स्वभाव से सरल और गुरुभक्त कौत्स नाम का शिष्य था। यह शिष्य थोड़े समय में ही वेदों का ज्ञाता और दर्शन शास्त्रों के गहरे ज्ञान वाला हो गया।

विद्या अध्ययन समाप्त करके गुरु दक्षिणा देने की उत्कण्ठा वाला कौत्स एक बार गुरु के समीप गया और उनसे अपनी इच्छा कही। गुरु वरतन्तु बोले–"हे कौत्स! मैं तुम्हारी सेवा और श्रद्धा से प्रसन्न हूँ इसलिए मैं दक्षिणा नहीं लेना चाहता।" आचार्य के वचन सुनकर कौत्स फिर बोला–"भगवन्, यदि आप दक्षिणा नहीं ग्रहण करेंगे तो मेरा अध्ययन व्यर्थ ही होगा।"

इस प्रकार जब कौत्स ने बार-बार आग्रह किया तो कुछ सोचकर क्रोधित हुए गुरु ने कहा–ठीक है, मुझे चौदह करोड़ स्वर्णमुद्राएँ दो।

गुरु की दक्षिणा के लिए कौत्स रघु के समीप गया। राजा रघु विनयशील, शास्त्रों में निपुण, प्रजा से प्रेम करने वाले और उदार हृदय वाले थे।

राजा ने कौत्स की सेवा की और आने का कारण पूछा। कौत्स ने राज़ा से चौदह करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ माँगी। उस समय राजा के पास धन का अभाव था। इसलिए रघु धन के स्वामी कुबेर के पास गए। रघु के अभिप्राय को जानकर धनपति कुबेर ने उनका खजाना भर दिया। भरे हुए खजाने को देखकर रघु प्रसन्न होकर कौत्स के समीप गए और बोले–"आप सारा धन ले लें।" कौत्स बोला–मैं अधिक धन नहीं चाहता हूँ। रघु अधिक धन देना चाहते थे परंतु कौत्स अधिक धन लेना नहीं चाहते थे। इस प्रकार कौत्स की गुरुभक्ति और रघु की उदारता अनोखी थी।

अभ्यासः

संकलनात्मकं मूल्यांकनम्

1. **पठत लिखत–** (पढ़िए और लिखिए–)

यहाँ कश्चित् काचित् और किञ्चित् के प्रयोग सिखाए गए हैं। छात्र उन्हें पढ़ें तथा सामने लिखें।

2. **उचितं विकल्पं चिनुत–** (उचित विकल्प चुनिए–)

(क) (*iii*) गुरुकुले ☑ (ख) (*ii*) गुरुदक्षिणाम् ☑

(ग) (*iv*) चतुर्दशकोटीः ☑ (घ) (*ii*) धनस्य ☑

(ङ) (*i*) कुबेरस्य ☑

3. **एकपदेन उत्तरत–** (एक पद में उत्तर दीजिए–)

(क) अनेके छात्राः (ख) वरतन्तुः (ग) कौत्सः

(घ) गुरुः वरतन्तुः (ङ) रघुः

4. **पूर्णवाक्येन उत्तरत–** (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए–)

(क) गुरुकुले छात्राः विद्याध्ययनं कुर्वन्ति स्म।

(ख) कौत्सः अल्पेन कालेन वेदानां वेत्ता दर्शनशास्त्राणां विज्ञाता च अभवत्।

(ग) विद्याध्ययनं परिसमाप्य गुरुदक्षिणां दातुम् उत्सुकः कौत्सः गुरोः समीपम् अगच्छत् निजेच्छां च अकथयत्।

(घ) राजा रघुः विनयशीलः शास्त्रनिपुणः, प्रजानुरागी, उदारचित्तः चासीत्।

(ङ) रघोः अभिप्रायं ज्ञात्वा धनपतिः कुबेरः तस्य कोषागारम् अपूरयत्।

5. **रञ्जितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–** (रंगीन पदों के आधार पर प्रश्न बनाइए–)

(क) के गुरुकुले पठन्ति स्म?

(ख) कः स्वभावेन सरलः गुरुभक्तः च आसीत्?

(ग) कस्य सेवया गुरुः प्रसन्नः अभवत्?

(घ) कौत्सः कस्य समीपम् अगच्छत्?

(ङ) कः धनपतेः कुबेरस्य समीपम् अगच्छत्?

6. **अधोलिखितपदानां विभक्तिं वचनं च लिखत–** (नीचे लिखे पदों के विभक्ति और वचन लिखिए–)

पदम्	**विभक्तिः**	**वचनम्**
गुरुकुले	सप्तमी	एकवचनम्
स्वभावेन	तृतीया	एकवचनम्
वेदानाम्	षष्ठी	बहुवचनम्
गुरोः	षष्ठी	एकवचनम्
सेवया	तृतीया	एकवचनम्
रघोः	षष्ठी	एकवचनम्
आगमनस्य	षष्ठी	एकवचनम्
स्वर्णमुद्राः	प्रथमा	बहुवचनम्

7. **यथानिर्देशम् उचितं विकल्पं चिनुत–** (निर्देश के अनुसार उचित विकल्प चुनिए–)

(क) (*iii*) छात्राः ☑ (ख) (*ii*) ल्यप् ☑

(ग) (*i*) वि ☑ (घ) (*iv*) निज + इच्छाम् ☑

(ङ) (*ii*) पार्श्वे ☑

धोलिखित-क्रियापदानां धातु-लकार-पुरुष वचनानि च लिखत–
ीचे लिखे क्रियापदों के धातु, लकार, पुरुष, वचन लिखिए–)

क्रियापदम्	धातुः	लकारः	पुरुषः	वचनम्
कुर्वन्ति	कृ	लट्	प्रथमः	बहुवचनम्
आसीत्	अस्	लङ्	प्रथमः	एकवचनम्
अभवत्	भू	लङ्	प्रथमः	एकवचनम्
अस्मि	अस्	लट्	उत्तमः	एकवचनम्
ग्रहीष्यति	ग्रह्	लृट्	प्रथमः	एकवचनम्
देहि	दा	लोट्	मध्यमः	एकवचनम्

अधोलिखित-क्रियापदानि लट्लकारे परिवर्तयत– (नीचे लिखे क्रियापदों को लट्लकार में बदलिए–)

लङ्लकारः	लट्लकारः	लङ्लकारः	लट्लकारः
अवदत्	वदति	अभवः	भवसि
अकुर्वन्	कुर्वन्ति	अपठम्	पठामि
अकथयत्	कथयति	अगच्छतम्	गच्छथः
अयच्छत्	यच्छति	अलिखन्	लिखन्ति

मूल्यांकनम्

वर्ग प्रहेलिकायाः पर्यायपदानि चित्वा लिखत– (वर्ग पहेली से पर्यायवाची शब्द चुनकर लिखिए–)

विनयशीलः	–	विनम्रः	सेवा	–	सपर्या
राज्ञः	–	नृपस्य	व्यर्थम्	–	निरर्थकम्
पार्श्वे	–	समीपे	विलोक्य	–	दृष्ट्वा
शिक्षकः	–	गुरुः	नृपम्	–	राजानम्
वाञ्छाम्	–	इच्छाम्	क्रुद्धः	–	कुपितः
समयेन	–	कालेन			

मन्दिरे तेन ...

अहं संगणकेन कार्यं करोमि।

12. सुभाषितानि

दी अर्थ–

वभा – सखी! तुम क्या पढ़ रही हो?

िया – विभा! मैं सुभाषित पढ़ रही हूँ।

वभा – सुभाषित क्या होती हैं?

िया – सुन्दर वचन अर्थात् सुन्दर वचन सुभाषित (सूक्तियाँ) होती हैं।

विभा – सुभाषितों की क्या उपयोगिता होती है?

प्रिया – क्या तुम नहीं जानती हो? हमारे आचार्य कहते हैं कि संस्कृत भाषा में सुभाषितों का विशाल भंडार है। व्यावहारिक जीवन में उनकी बहुत उपयोगिता होती है। वे हमारी पथप्रदर्शक हैं।

विभा – हमारी पाठ्यपुस्तक में भी कुछ सुन्दर वचन हैं। आओ, पढ़ें–

1. आलसी की विद्या कहाँ? विद्याहीन का धन कहाँ? धनहीन के मित्र कहाँ? मित्रहीन का सुख कहाँ? अर्थात् आलसी को विद्या नहीं मिलती, विद्याहीन को धन नहीं मिलता, धनहीन के मित्र नहीं होते, मित्र हीन को सुख नहीं मिलता।
2. रूप और यौवन से सम्पन्न, विशाल कुल में उत्पन्न हुआ विद्याहीन (व्यक्ति) उसी प्रकार शोभायमान नहीं होता जैसे गन्धरहित किंशुक का फूल शोभायमान नहीं होता।
3. जिसके पास स्वयं निर्णय ज्ञान नहीं है शास्त्र उसका क्या कर सकते हैं। जैसे–आँखों से रहित के लिए दर्पण (शीशा) क्या करेगा?
4. जो विद्या पुस्तकों में है और जो धन दूसरे के हाथ में चला गया है। समय पड़ने पर अर्थात् आवश्यकता आने पर न तो वह विद्या प्राप्त की जा सकती है और न ही वह धन प्राप्त किया जा सकता है।
5. सायंकाल (निकट रात्रि) में चन्द्रमा दीपक होता है। प्रातःकाल में सूर्य दीपक होता है। तीनों लोकों में धर्म दीपक होता है। श्रेष्ठ पुत्र कुल का दीपक होता है।
6. जैसा विचार वैसी वाणी, जैसी वाणी वैसे कार्य। सज्जनों के विचार, वाणी और कार्यों में एक समानता होती है।
7. विद्वत्ता और राजपद की कभी तुलना नहीं करनी चाहिए। राजा केवल अपने देश में पूजा जाता है और विद्वान सब जगह पूजा जाता है।
8. प्रिय वाक्य बोलने से सब लोग प्रसन्न होते हैं इसलिए प्रिय वचन ही बोलने चाहिए। अच्छे वचन बोलने में गरीबी (कमी) कैसी? अर्थात् प्रिय वचन बोलने में कमी नहीं करनी चाहिए।

संकलनात्मकं मूल्यांकनम्

1. **श्लोकान् सस्वरं पाठं कुरुत–** (श्लोकों को स्वर सहित पढ़िए–)
दिए गए श्लोकों को छात्र पूरे स्वर के साथ शुद्ध रूप से उच्चारण करके पढ़ें।

2. **पठत लिखत च–** (पढ़िए और लिखिए–)
यहाँ 'पूज्' धातु के आत्मनेपदी में रूप दिए गए हैं। छात्र उन्हें पढ़ें तथा सामने दी गई जगह में लिखें।

3. **उचितं विकल्पं चिनुत–** (उचित विकल्प चुनिए–)

(क) (*ii*) अलसस्य ☑ (ख) (*i*) अविद्यस्य ☑

(ग) (*iii*) अधनस्य ☑ (घ) (*ii*) अमित्रस्य ☑

(ङ) (*iii*) षष्ठी ☑

4. **एकपदेन उत्तरत–** (एक पद में उत्तर दीजिए–)

(क) चन्द्रः (ख) सूर्यः (ग) धर्मः

(घ) सुपुत्रः (ङ) सप्तमी

5. **पूर्णवाक्येन उत्तरत–** (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए–)

(क) प्रियवाक्यप्रदानेन जनाः तुष्यन्ति।

(ख) प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे जन्तवः प्रसन्नाः भवन्ति।

(ग) अस्माभिः प्रियं वक्तव्यम्।

(घ) प्रियवचने दरिद्रता न भवेत्।

6. **रञ्जितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–** (रंगीन पदों के आधार पर प्रश्न बनाइए–)

(क) किम् चित्तानुसारं भवेत्?

(ख) केषां चित्ते, वाचि क्रियायां च एकरूपता भवति?

(ग) कः सर्वत्र पूज्यते?

(घ) राजा कुत्र पूज्यते?

7. **समानार्थकपदानि मेलयत–** (समान अर्थ वाले पद मिलाइए–)

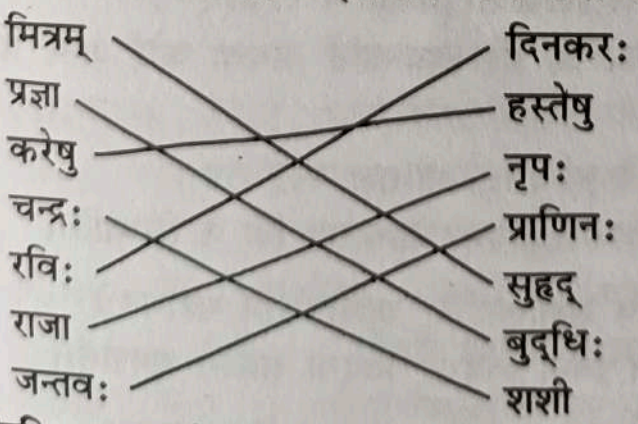

8. **अधोलिखितानां श्लोकानाम् अन्वयं पूरयत–** (निम्नलिखित श्लोकों के अन्वय पूरे कीजिए–)

श्लोक 2 : (ये) रूपयौवनसम्पन्नाः, विशालकुलसम्भवाः विद्याहीनाः (सन्ति, ते) निर्गन्धाः किंशुकाः इव न शोभन्ते।

श्लोक-7 : विद्वत्वं च नृपत्वं च कदाचन तुल्यं न (अस्ति) राजा (केवले) स्वदेशे पूज्यते (किन्तु) विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।

श्लोकांशान् मेलयत– (श्लोक के अंशों को मिलाइए–)

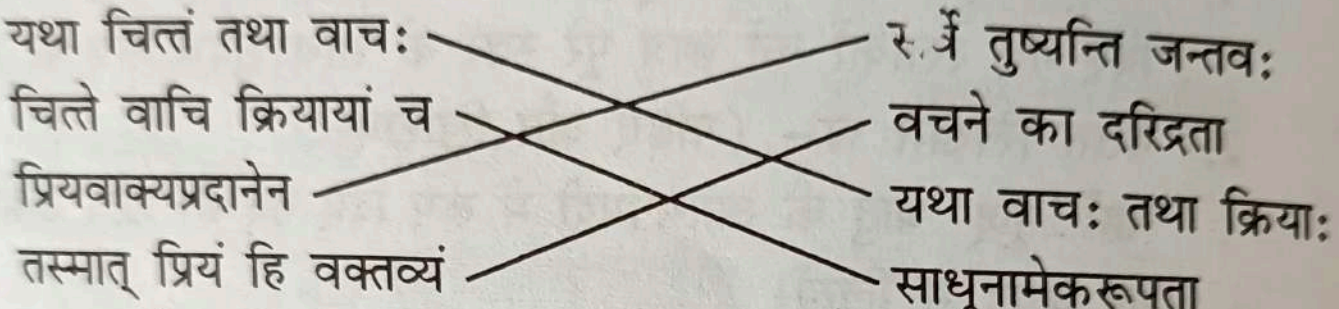

कः कुत्र पूज्यते इति मेलनं कुरुत– (कौन कहाँ पूजा जाता है इस प्रकार मिलाइए–)

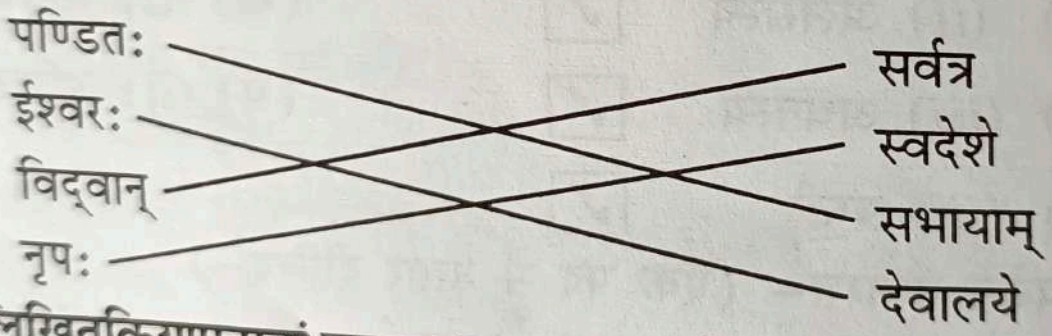

1. **अधोलिखितक्रियापदानां लकार-पुरुष-वचनानि च लिखत–** (नीचे लिखे क्रियापदों के लकार, पुरुष और वचन लिखिए–)

क्रियापदम्	धातुः	लकारः	पुरुषः	वचनम्
तुष्यन्ति	तुष् (तुष्य)	लट् लकारः	प्रथमः	बहुवचनम्
करिष्यति	कृ	लृट् लकारः	प्रथमः	एकवचनम्
शोभन्ते	शुभ्	लट् लकारः	प्रथमः	बहुवचनम्
करोति	कृ	लट् लकारः	प्रथमः	एकवचनम्
अलिखन्	लिख्	लङ् लकारः	प्रथमः	बहुवचनम्
कुरु	कृ	लोट् लकारः	मध्यमः	एकवचनम्
भवामः	भू (भव्)	लट् लकारः	उत्तमः	बहुवचनम्

ात्मकं मूल्यांकनम्

1. **पञ्चनीतिश्लोकान् चार्टपत्रे**